HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-III (Religious Policy Of Mohammad bin Tuglak)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 35

"मुहम्मद-बिन-तुगलक की धार्मिक नीति"

(Religious Policy of Muhammad-bin-Tughluq)

Dr Guddy Kumari(A.N.D college)

इस्लामी साम्राज्य में धर्मवेताओं को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। शरा के नियमों की व्याख्या उलेमा और काजी के द्वारा की जाती थी। सुल्तान कुरान के नियमों को शासन का आधार मानते थे। दिल्ली सल्तनत के इतिहास में अलाउद्दीन पहला सम्राट था जिससे शरा के बदले बुद्धि को राजनीति का आधार बनाया था। मोहम्मद बिन तुगलक का धार्मिक विचार अलाउद्दीन से मिलता जुलता था। उसने उलेमाओं और शरा की उपेक्षा नहीं की लेकिन वह आंख मूंदकर उनके विचार को स्वीकार करना नहीं चाहता था। तर्कसंगत और विवेकपूर्ण विचारों को मोहम्मद बिन तुगलक ज्यादा महत्व देता था। ईश्वर और पैगंबर में सुल्तान की आस्था थी। वह स्वतंत्र विचार का पृष्ठ पोषक था। धर्म पर काजियो और उलेमाओं के एकाधिकार को उसने समाप्त कर दिया था। काजी की निर्णय यदि सुल्तान की नजर में युक्तिसंगत नहीं लगता था तो वह उन्हें लौटा देता था। काजी की नियुक्ति वर्ग विशेष के आधार पर की जाती थी। मोहम्मद बिन तुगलक ने इत्तर मुसलमानों को काजी के पद पर नियुक्त किया और उनके निर्णय में हस्तक्षेप करने लगा। उदाहरण के लिए सुल्तान का भाई मुबारक खा काजी के साथ बैठकर मुकदमों का निर्णय करता था। उलेमा, शेख, सैयद सभी कानून के अंदर दंड के भागी थे। अपराध, गबन, बगावत करने पर धार्मिक वर्ग के लोगों को कठोर दंड दिया जाता था। इब्नबतूता ने लिखा है कि सभी व्यक्तियों में सुल्तान सबसे अधिक विनम्र और न्याय प्रिय था। बरनी और इसामी जैसे समकालीन इतिहासकारों की नजर में मोहम्मद बिन तुगलक काफिर था। परंतु फरिश्ता ने उसे धर्म परायण शासक माना है।

बलबन की तरह मोहम्मद बिन तुगलक भी अपने को ईश्वर की छाया मानता था। वह सुल्तान को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था और राजकीय आदेशों का पालन करना प्रजा का धार्मिक कर्तव्य समझता था। सुल्तान ने पहले खलीफा को मान्यता नहीं दी थी परंतु जन विद्रोह से प्रभावित होकर उसने अपने सिक्कों में खलीफा का नाम अंकित करवाया। मुस्लिम जनता को प्रसन्न रखने के लिए सभी आदेश खलीफा के नाम से निकाला जाता था। मिस्र के खलीफा गयासुद्दीन मोहम्मद को मोहम्मद

बिन तुगलक ने सम्मान दिया था और उसे दरबार में बुलाकर उपहार भेंट की थी। अतः सुल्तान के काफिर होने की बात तर्कसंगत नहीं दिखाई पड़ती है।

मोहम्मद बिन तुगलक का लालन–पालन उदार चरित्र वाले व्यक्तियों की देखरेख में हुआ था। वह उदार एवं व्यापक दृष्टिकोण रखता था। हिंदुओं के प्रति अलाउद्दीन का संकुचित दृष्टिकोण था। परंतु मोहम्मद बिन तुगलक का दृष्टिकोण व्यापक था और उसने हिंदुओं को प्रोत्साहन दिया था। शासन में हिंदुओं को उच्च पद देने का काम मोहम्मद बिन तुगलक ने प्रारंभ किया था। उसने सिंधु का सूबेदार रतन, गुलबर्गा का सूबेदार मीरा राय और धारा को देवगिरी का उप मंत्री नियुक्त किया गया था। मोहम्मद बिन तुगलक सभी धार्मिक संप्रदाय के शिर्ष नेताओं से विचार–विमर्श करता था और उन्हें राजकीय सम्मान भी देता था। जैन संत प्रभसुरी जी को राजदरबार में अत्यधिक सम्मान प्राप्त था। भारत में बहुसंख्यक आबादी हिंदुओं की थी। उनके प्रति उदार नीति अपनाने से रूढ़िवादी मुस्लिम समाज मोहम्मद बिन तुगलक का विरोधी बन गया और वह सुल्तान की उदार नीति का कटु आलोचक बन गया।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr Guddy Kumari(A.N.D college)